त्रिविध आत्मशुद्धि

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक १४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ४ जून, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

मालिकी-हक और राज्य

बम्बअीके अेक भाअीने 'ठाटबाटका मोह' शीर्षकसे अेक विचार लिख भेजा था, जिसकी चर्चा ता० २१–५–'५५ के अंकमें पाठकोंने देखी होगी। अेक दूसरा विचार भी अुन्होंने लिख भेजा है, जो अुतना ही गंभीर है। अुन्हींके शब्दोंमें अुसे नीचे देता हूं। पाठक देखेंगे कि अिस विचारकी आज दूसरे कअी लोग भी चर्चा करते हैं। अिसके अर्थकी गहरे पैठ कर चर्चा करनी चाहिये। पहले अुन भाअीका विचार देखें:

"हमारे देशकी आम जनताका बड़ा भाग गरीब है। हमारे कल्याण-राज्यका हेतु अुनकी गरीबी दूर करके अुनका जीवन-स्तर अूंचा अुठाना और सबको आर्थिक समानताकी कक्षा पर पहुंचाना है, और वह शुभ हेतु है।

"अिसका अेक अुपाय है अुत्पादनके साधनों और राज्य-सत्ताका विकेन्द्रीकरण। अन्न, वस्त्र और मकान मनुष्य-जीवनकी मुख्य आवश्यकतायें हैं। सैकड़ों और हजारों अेकड़ जमीनके मालिक जमींदारोंसे ५० अेकड़से अधिक जमीन, कम-ज्यादा मुआवजा देकर या दूसरी तरह समझाकर अथवा कानून द्वारा, ले ली जाय तो देशकी आजकी स्थितिमें यह अन्याय न होगा। परंतु 'जोते अुसकी जमीन' के नारे द्वारा, कमसे कम कितनी जमीन रखी जा सकती है अिसकी सीमा तय किये बिना, बूढ़ी विधवाओं, बूढ़े शिक्षकों और अैसे दूसरे निरुपद्रवी अशक्तों और वृद्धोंकी जीविकाका अेकमात्र साधन केवल चार-पांच अेकड़ जमीन भी छीन ली जाय, यह क्या अुचित है?

"यह सच है कि जमीन अुत्पादनका साधन है, परंतु केवल वही अुत्पादनका साधन नहीं है। **मिलें, कारखानें, खानें** और स्वयं **पैसा** भी अुत्पादनके साधन हैं। राष्ट्र-विकास कर्जमें पैसे भरनेका सतत आग्रह बताता है कि पैसा भी अुत्पादनका अेक साधन ही है। अिन सबमें अूपरके नारेका अमल क्यों नहीं किया जाता? करना चाहिये या नहीं?

"अन्नकी तरह मकान भी जीवनके लिअे अति आवश्यक है। अुसका महत्त्व वे लोग ही समझ सकते हैं, जिन्हें १० × १० फुटकी कोठरीमें भेड़ोंकी तरह घुसे रहना पड़ता है या अितनी जगह भी न मिल सकनेकी वजहसे फुटपाथ पर गटरकी भयंकर दुर्गन्धमें लाचारीसे पड़े रहना पड़ता है। अिसके विपरीत धनी लोग चढ़ते क्रमसे प्रति मनुष्य २००, ५०० वर्गफुट या अिससे भी ज्यादा जगहका खुले आम अुपयोग करते हैं।

"अिस स्थितिमें सुधार होना ही चाहिये। यह कोअी अैसी समस्या नहीं है कि अिसमें सुधार या परिवर्तन हो ही नहीं सकता। जिन लोगोंके पास अधिक हो अुनसे लेकर जिनके पास बिलकुल नहीं है या बहुत कम है अुन्हें दिया जाय, तो भी जिनसे लिया जाय अुनके पास अुनकी जरूरतका अन्न, वस्त्र, मकान वगैरा रहने ही देना होगा। किसी मिल-मालिकको नग्न दशामें रखकर अुसका सारा कपड़ा नहीं लिया जा सकता। किसी मकान-मालिकको फुटपाथ पर फेंककर अुसकी सारी जगह नहीं ली जा सकती। ठीक अिसी न्यायसे किसीकी कमसे कम जमीन भी नहीं ली जानी चाहिये। कमसे कम जमीन कितनी हो सकती है, यह सरकार — राष्ट्र — को तय करना चाहिये। और जमीन रखनेकी अल्पतम मर्यादा तय करनेके बाद, अुतनी मर्यादाकी मालिकीको सरकारके किसी भी कानूनसे जरा भी नुकसान नहीं पहुंचना चाहिये। जायदाद प्राप्त करने और अुसे रखनेका अधिकार हमारे नये संविधानने भी स्वीकार किया है। आवश्यकता हो तो अुसमें सुधार करके मिल्कियतकी अुच्चतम और अल्पतम मर्यादा निश्चित करना चाहिये, जिससे अुच्चतम मर्यादासे अूपरके लोग बिना मेहनत किये मौज न अुड़ा सकें तथा अल्पतम मर्यादाके भीतरके लोग बिना अपराधके मारे न जायं।"

अिन शब्दोंमें पत्रलेखकने मालिकी-हकके स्थान और अुसके अुपभोगकी स्वतंत्रताका बुनियादी प्रश्न अुठाया है। भारतका संविधान अुस अधिकारको और अुसके अुपभोगकी स्वतंत्रताको स्वीकार करता है।

बात यह है कि व्यवस्थित समाजमें अधिकार और स्वतंत्रताके साथ कर्तव्य और संयम रहते ही हैं। ये हों तो ही अधिकार और स्वतंत्रता समझे या स्वीकारे जा सकने लायक गुण माने जा सकते हैं, क्योंकि कर्तव्य और संयमके बिना ये दोनों अन्तमें निरी निरंकुशता या स्वच्छंदताका रूप ले लेते हैं। अैसा होने पर समाज टिक नहीं सकता। अिसलिअे मूल प्रश्न यह है कि कर्तव्यका भान लोगोंमें कैसे पैदा किया जाय और संयमकी आवश्यकता कैसे समझाअी जाय तथा अुन्हें अमलमें कैसे लाया जाय? राज्य-सत्ता अिसमें क्या भाग ले सकती है?

पत्रलेखक ठीक कहते हैं कि जमीनकी मालिकीकी अमुक अल्पतम मर्यादा तय करनेके बाद किसी सार्वजनिक आपत्तिके सिवा अन्य कारणसे सरकारी कानूनका अुसमें हस्तक्षेप नहीं हो सकता। अुदाहरणके लिअे, मान लीजिये कि जमीनकी अल्पतम मर्यादा १० अेकड़ तय की जाती है; और मेरे पास ८ अेकड़ जमीन है जिसे मैंने लगान पर अुठा दिया है। अब यदि लगान-कानून अैसा कहे कि लगान पर जमीन जोतनेवाले काश्तकारसे आप खुद खेती करनेके लिअे जमीन नहीं ले सकते, तो क्या यह कानूनका अनुचित

www.vinoba.in

हस्तक्षेप नहीं होगा? लगानकी रकमके बारेमें, अेक काश्तकारसे जमीन लेकर दूसरेको देने और अधिक लगान वसूल करनेके बारेमें नियंत्रण हो, यह दूसरी बात है। परंतु मैं स्वयं खेती करना चाहूं तो मुझे काश्तकारसे मेरी जमीन मिलनी चाहिये। यह मालिकीका सीधा सादा अर्थ है, जिसे मिटाया नहीं जा सकता। मैंने सुना है कि बम्बअी राज्यमें अिस बारेमें कुछ अैसा नियंत्रण है कि लगान पर जमीन जोतनेवालेसे अैसी जमीन लेना चाहनेवाला किसान होना चाहिये, और किसान वह कहा जायगा जिसकी दूसरी मासिक आय १०० रुपये या अमुक रकमके भीतर हो।

यहां प्रश्न यह अुठता है कि अगर मैं किसान बनना चाहूं तो क्या होगा? बदलते हुअे जमानेको देखकर अगर मैं खेती करना चाहूं तो अुसमें मेरी आयका प्रश्न क्यों अुठना चाहिये? अपनी जमीनमें से अपना अन्न पैदा करनेके लिअे अल्पतम मर्यादाकी जमीन मैं रखूं, तो राज्य कैसे और किस न्यायसे मुझे रोक सकता है — पत्रलेखकका यह प्रश्न सही है।

यह न्याय दूसरे क्षेत्रोंमें लागू किया जाय तो क्या होगा, अिसका चित्र अुन्होंने खींचा है। वह अैसी मनाहीकी विचित्रता बतानेके लिअे काफी है। फिर भी समाजमें यदि न्यायका पालन करना हो, तो अिस प्रश्नको केवल जमीन तक ही मीमित न रखकर मालिकीके दूसरे प्रकारों तक भी ले जाना होगा। यद्यपि जमीनकी मालिकी और दूसरी मालिकीमें अेक बड़ा फर्क है — जमीन कुदरतकी देन है; मनुष्य अुसके जरिये ही अन्न प्राप्त कर सकता है। अिसलिअे मनुष्य स्वयं अन्न पैदा करना चाहे तो अुसे श्रम करके खानेके लिअे अल्पतम जमीन मिलनी ही चाहिये; अथवा अुसके बदलेमें अुद्योग-धंधेमें स्वाभिमानके साथ श्रम करके रोटी कमानेका मौका मिलना ही चाहिये।

मालिकी-हकके साथ श्रम करके अपनी रोटी कमानेका यह व्यापक मानव अधिकार भी हमारे संविधानमें स्वीकार किया गया है। हमें सहयोग और समभावपूर्वक अिन बुनियादी अधिकारोंके न्यायसे अपने समाजकी नवरचना करनी है। अिसमें आराम, आलस्य या हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना हराम माना जाना चाहिये। हम नागरिकके नाते स्वयं कर्तव्य और संयमका जितना भान बतायेंगे, अुतना ही कानून दूर रहेगा या हलका होगा, अथवा राजीखुशीसे स्वीकारा जायगा। अैसा न हो तो अुग्र प्रयत्न करके क्रान्तिको भी निमंत्रण देना जरूरी हो जायगा। भूदान-आन्दोलन अिस प्रश्नका स्वाभाविक और शान्तिमय तथा धर्मपरायण मार्ग निकालना चाहता है।

६-५-'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिकाके साथ]

लेखक: किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

[तीसरी आवृत्ति]

लेखक: जुगतराम दवे; अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

बुनियादी शिक्षा

गांधीजी

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

घरेलू दस्तकारियोंका मूल्य

अपने बचपनके दिनोंकी मेरी अत्यन्त सुखद यादोंमें से अेक ठंडकी ऋतुमें प्रतिदिन शामको भोजनके बाद जब साफ-सफाअी हो चुकती, तब हम लोग जिस तरह आनन्दपूर्वक अपना समय-यापन करते थे, अुसकी है। बत्ती जला दी जाती, खिड़कियां बंद कर दी जातीं और कमरेको गरम रखनेके लिअे अंगीठीमें आग सुलगा दी जाती। फिर मां हमें बुलाकर कहती: "बच्चो, अब आज तुम लोग क्या करनेवाले हो?" और हम लोग तुरंत अपनी-अपनी पसंदके अनुसार अुत्तर देते: "मैं चित्र-लेखन करूंगा।" "मैं कसीदा काढ़ूंगा।" "मैं बुनाअी करूंगा।" "मैं तो अपनी किताब पूरी करूंगा।"

मांके पास तो सीने-बुनने और फटे-टूटे कपड़ोंकी दुरुस्ती करनेका काम हमेशा रहता ही था। पिताको लकड़ीके कामका शौक था। घरकी नयी पीढ़ीकी जरूरतोंके अनुसार नयी आलमारियां, संदूकें, सामान ढोनेकी छोटी गाड़ियां, या अिसी तरहकी दूसरी चीजें बनाने और घरको सुसज्जित करते रहनेमें अुन्हें बहुत आनन्द आता था।

ज्यों ज्यों मैं बड़ा होता जा रहा हूं, जाड़ेके दिनोंकी संध्याका वह पारिवारिक दृश्य अपने बचपनकी स्मृतियोंमें मुझे सबसे ज्यादा सुंदर और तृप्तिकारक मालूम होता है और मैं अुस पर जितना ज्यादा सोचता हूं, अुतना ही मेरा यह विश्वास बढ़ता जाता है कि प्रगतिके आधुनिक युगने अपने सारे वैज्ञानिक आविष्कारों — रेडियो और टेलीविजन आदि सुख-सुविधाके सारे नये-नये साधनों — के बावजूद अुतनी तृप्तिकारक, सांस्कृतिक परिष्कारकी दृष्टिसे अुतनी अच्छी तो दूर, अुसकी तुलनामें आधी अच्छी भी कोअी चीज नहीं दी है।

अुन दिनों भी हम लोग अुस युगको भूले नहीं थे, जब शिल्प और दस्तकारीको सम्मानकी दृष्टिसे देखा जाता था, और अधिकांश ज्ञान पढ़नेकी मार्फत या आजकी तरह रेडियो अथवा टेलीविजनके जरिये नहीं, बल्कि कामके जरिये और सुन्दर तथा अुपयोगी वस्तुओंके निर्माणके जरिये प्राप्त किया जाता था।

हमारे बाप-दादोंको अैसे ही साधनोंसे ज्ञान प्राप्त करना अधिक स्वाभाविक लगता था, जिनसे हमारे हाथोंके कौशलका विकास हो और जो हमें सुन्दर तथा अुपयोगी वस्तुओंके अुत्पादनका सामर्थ्य प्रदान करें। अुनको यह सहज-बोध था कि अुपयोग या अलंकरणकी वस्तुओंका निर्माण करनेकी शक्तिका विकास करनेसे निर्माताओंमें कअी गुणोंकी वृद्धि होती है — अुनकी सौन्दर्य-बोध और आत्माभिव्यक्तिकी शक्ति बढ़ती है और अुनके व्यक्तित्वमें अेक विशेषता आ जाती है, जो महज धन-संपत्तिसे ज्यादा मूल्यवान् है। आज जब धन-संपत्तिको ज्यादा सम्मान मिलने लगा है, तब अिस प्रवृत्तिके विरुद्ध जानेवाले अिस पुराने ज्ञानको लोग भूल गये हैं।

सांस्कृतिक विकासके अिस सर्जक मार्ग पर हमें बढ़नेको — जब हम काफी छोटे थे तभी — अुत्साहित करनेके लिअे हम बच्चोंको अपने अुपयोगके लिअे अेक-अेक संदूक दिया गया था। यह हम लोगोंके लिअे बड़े आनन्द और गर्वका अवसर था, क्योंकि तब तक हम लोगोंके पास कअी छोटे-छोटे औजार और कअी दूसरी चीजें, जैसे, रंग, रंगीन पेंसिलें, सुअियां आदि अिकट्ठी हो गयी थीं। खेलका सामान पारिवारिक अलमारीमें रहता था और वह शामके बाद ही निकाला जाता था, यानी दिनभर निर्माणकारी सर्जक कामोंमें लगे रहनेके बाद जब हमारा मन अुनसे पूरी तरह तृप्त हो जाता था, तब।

बचपनके अिन कामोंमें मुझे बुनाअीका काम बहुत प्रिय था। मैं दस वर्षका हुआ, अुसके पहले ही मैं अपनी बहिनों, मां

www.vinoba.in

और चचेरे भाअी-बहिनोंमें से हरअेकको १२"×४०" का अेक-अेक गुलूबन्द बुनकर दे चुका था। मुझे आज भी याद है कि अुस अूनका रंग गहरा लाल था और यह याद मैं जब तक जीवित हूं, तब तक बनी रहेगी।

क्या यह बात बिलकुल विचारके बाहर है कि हम लोग घरमें कुछ शिल्प और दस्तकारीका काम करते रहनेकी अिस पुरानी परम्पराको पुनर्जीवित करें? अितना तो असंदिग्ध है कि हमने अुसकी जगह अुससे अच्छी कोअी चीज अभी तक पैदा नहीं की है। अिसके सिवा, सांस्कृतिक परिष्कृतिके लिअे अैसी कलाके अभ्याससे बढ़कर और दूसरी क्या चीज हो सकती है, जो हमारी कल्पना और दूसरी सर्जक शक्तियोंका विकास करे। टेलीविजन, सिनेमा और भाषणोंका भी सांगोपांग जीवनमें अेक स्थान है, लेकिन हमने अुन्हें अपने जीवनके संपूर्ण रंगमंच पर अधिकार कर लेने दिया है, जिससे सर्जक कर्मके मूल्योंके द्वारा हमने अपने मन, जीवन और आसपासके वातावरणको समृद्ध करनेकी बुद्धि खो दी है और हम केवल आंख तथा कान बनकर रह गये हैं।

हम जो कुछ देखते और सुनते हैं, अुसका मूल्य हमारे आचरण और हमारी जीवन-प्रणाली पर अुसके प्रभावके द्वारा निर्धारित होता है। जो कुछ हम सीख रहे हैं, अुसके प्रयोग किये बिना केवल हमेशा सुनते रहना और देखते रहना न सिर्फ जीवनको निरर्थक बना देता है, बल्कि मन, बुद्धि और स्मृतिको भी नष्ट कर डालता है। क्योंकि यदि पाया हुआ ज्ञान हमारे दैनिक जीवनके साथ गुंथकर अेक नहीं हो जाता, तो हमारा मन अेक सीमा तक ही ज्ञान धारण कर सकता है, अुससे अधिक नहीं। योग्य कार्य करके हम चारित्रिक दृष्टिसे जैसे बनते हैं, अुसीका महत्त्व है। सामाजिक प्रगतिका अर्थ ही यह है कि लोग ज्यादा भले और ज्यादा योग्य व्यक्ति बनें; वे जैसे थे अुससे आगे बढ़कर नये और अच्छे आदमी बनें। दूसरे शब्दोंमें सामाजिक प्रगति अधिकाधिक अूंची भूमिकाओं पर आत्म-अभिव्यक्तिके जरिये अपनी चरितार्थता सिद्ध करनेका नाम है।

मनुष्यकी समग्रता अुसकी ग्रहणशील और सर्जनशील शक्तियोंके घात-प्रतिघातका फल है। ग्रहणशील शक्तियोंके जरिये हम अपने सर्जक प्रयत्नोंमें सुधार करनेके लिअे नये विचार और नअी प्रेरणायें संचित करते हैं और जब वे चुक जाते हैं, तो नयी प्रेरणा प्राप्त करनेके लिअे हम फिर साहित्य, कला और संगीतकी ओर जाते हैं।

घरमें चलनेवाली दस्तकारियां परिवारके लोगोंको अेक-दूसरेके साथ बन्धुत्वमें बांधती हैं, यह अुनका अेक और महत्त्वपूर्ण लाभ है। जब किसी परिवारके सदस्य अपनी आत्माभिव्यक्ति अुपयोगी और सुन्दर वस्तुओंके निर्माणमें करते हैं, तो अुससे अुनके अुत्तम गुणोंका विकास होता है और अिस तरह पारिवारिक प्रेमके बंधन दृढ़ होते हैं। अैसा हो तो परिवार अेक अैसा केन्द्र बन जाता है, जो मनुष्यके स्वभावमें निहित अुत्तम तत्त्वोंको अुद्घाटित करता है, जिससे अुक्त परिवारके सदस्य गांवके बृहत्तर समाजमें जोरदार संयोजक शक्तियोंकी तरह काम करते हैं।

अभिव्यक्तिके दूसरे सामूहिक रूप भी हैं; जैसे, नाटक, गीत, वादन, वृन्द-वादन आदि। अिनका भी बड़ा महत्त्व है।

जो लोग अिन कार्योंमें कर्ताकी तरह भाग लेते हैं, अुन्हें और जो अुन्हें केवल देखते और सुनते हैं, अुन्हें भी अपरिमित सांस्कृतिक लाभ होता है। अेक ओर तो विचारों और भावोंको शब्द, लय और स्वरके द्वारा प्रकाशित करनेकी योग्यता प्राप्त करनेमें शिक्षार्थीको काफी अभ्यास और परिश्रम करना पड़ता है, दूसरी ओर अिन विचारों और भावोंको श्रोताओं तक सफलतापूर्वक पहुंचाया जाय, तो दुर्लभ आनन्द प्राप्त होता है।

पैसेके मूल्योंके वेगपूर्ण प्रचार और आनन्दको अपने प्रयत्नसे पानेके बजाय पैसेसे खरीदनेकी प्रवृत्तिके कारण पिछले ५० वर्षोंमें सांस्कृतिक मनोरंजनके अिन रूपोंकी बड़ी अवनति हुअी है। हर्षकी बात है कि अब अुन्हें पुनरुज्जीवित करनेके प्रयत्नके चिन्ह दिखाअी दे रहे हैं।

मेरी युवावस्थामें प्रायः सारा मनोरंजन चर्चकी सीमाओंके अन्दर ही प्राप्त हो जाता था। हमारे चर्चमें अेक बड़ी क्रियाशील संस्था थी 'पारस्परिक सुधार समिति'। अुसके काफी सदस्य थे। यह संस्था गांवकी वस्तीके लिअे महत्त्वपूर्ण प्रत्येक बातकी चर्चा करती थी। हम लोगोंका अेक नाटक-संगीत समाज भी था, जिसमें गायन और वादनके विविध प्रकारोंका अभ्यास किया जाता था। कभी मनोरंजन-समारोहोंके सिलसिलेमें आवश्यकता पड़ जाती, तो बहुत कम समयमें हम लोग नाटक करनेवालोंके दो-चार दल खड़े कर सकते थे।

फलतः जिन लड़कों या युवकोंमें कोअी विशेष योग्यता या प्रतिभा होती, वे शीघ्र ही प्रकाशमें आ जाते थे। कलात्मक आत्माभिव्यक्तिकी देन रखनेवाले व्यक्तिको अपने गुणके विकासके लिअे सदा अवसर मिल जाया करता था। साहस और योग्यताकी कद्र खूब होती थी। अिसलिअे जो लोग विशेष योग्यता या प्रतिभा प्रगट करते थे, अुनकी संख्या अुस समय बहुत ज्यादा थी और साथ ही अुनको अूंचा सम्मान मिलता था, अिसलिअे समाजमें अुनकी प्रतिष्ठा, दर्जा और प्रभाव भी था।

आज अैसे आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं, जिन्हें देखकर आशा होती है कि शायद हम फिर अुस अधिक आध्यात्मिक जनतंत्रकी दिशामें बढ़ रहे हैं। अिस बातका विश्वास करनेके कारण हैं कि दीर्घकाल तक जो जनप्रवाह गांवोंसे शहरोंकी तरफ चलता रहा, वह अब शहरोंसे गांवोंकी तरफ चलनेवाला है। यह डर लगातार बढ़ रहा है कि शीघ्र ही अैसी परिस्थिति आनेवाली है जब ब्रिटेनको अपने निर्यातके लिअे बाहर आवश्यक बाजार नहीं मिलेंगे और अिसलिअे वह अपनी आवश्यकताका अन्न और कच्चा माल बाहरसे लेनेमें असमर्थ हो जायगा। अैसी हालतमें अुसे देशके अन्दर ही ज्यादा अन्न पैदा करना होगा, और औद्योगिक क्रान्तिको अुलटी दिशामें मोड़ना होगा।

अिसका मतलब यह है कि आबादीको अब गांवोंकी ओर लौटना होगा। सरकार अिसी अुद्देश्यसे आजकल गांवोंमें छोटे-छोटे अुद्योग खोलनेका अुपक्रम कर रही है और ग्रामीण जीवनको अधिक आकर्षक बनानेके लिअे वहां गायन, वादन, नाटक आदि रंजनकारी प्रवृत्तियां बढ़ानेवाली समितियां शुरू करनेके लिअे आवश्यक सहायता दे रही है। सरकारका यह प्रयत्न सराहनीय है।

(अंग्रेजीसे) **विल्फ्रेड वेलॉक**

ठक्करबापा

[जीवन-चरित्र]

लेखक : कान्तिलाल शाह; अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ५-०-० डाकखर्च १-२-०

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

लेखक : गांधीजी

संपादक : भारतन् कुमारप्पा

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

४ जून १९५५

त्रिविध आत्मशुद्धि

कांग्रेसमें आज फिरसे शुद्धिकी बात जोरोंसे चलने लगी है। यह चीज अुस संस्थाकी अेक विशेषता मानी जायगी। बहुत कम संस्थायें अिस तरह अपने पर निगरानी रखती हैं।

कांग्रेसकी अिस विशेषताका श्रेय गांधीजीको है। १९२० में अुन्होंने स्वराज्य आन्दोलन शुरू किया, तब वे कहने लगे कि राष्ट्रकी शक्तिको बढ़ाने और संगठित करनेका मार्ग 'आत्मशुद्धि' है। अुन्होंने यह पुकार अुठाअी कि "यह आन्दोलन आत्मशुद्धिका आन्दोलन है, क्योंकि हमारे भीतर जो दोष हैं अुन्हींकी वजहसे विदेशी हुकूमत यहां टिकी हुअी है। अिसलिअे अुन दोषोंको दूर करनेके लिअे सामुदायिक आत्मशुद्धिके कार्यक्रम पर अमल किया जाय।" अस्पृश्यताका पाप दूर करो, स्वदेशी धर्मका पालन न करनेसे हम लोग भूखों मरते हैं, अिसलिअे अुसका फिरसे पालन करो, सरकारकी गुलामीकी ओर ले जानेवाली शिक्षाका त्याग करो — आदि अिस नये कार्यक्रमके बड़े अंग थे। अिस प्रकार भारतकी राजनीतिमें धर्मकी परिभाषाका 'आत्मशुद्धि' शब्द दाखिल हुआ। तबसे यह शब्द कम-ज्यादा अंशमें अिस संस्थाके कामकाजमें हमेशा दिखाअी देता रहता है।

अिसका कारण है: सत्य और शांति या अहिंसासे यदि काम करना हो तो अुसका रास्ता आत्मशुद्धि ही है।

आज कांग्रेस अपने तंत्रकी शुद्धिकी चर्चा करती है। अुसके तंत्रमें सत्ताका लोभ और पदलालसा गहरे पैठ गये हैं। अिसके लिअे झूठे सदस्य बनाना, चुनावमें झूठा मतदान दिलाना, आपसमें दलबंदी खड़ी करना वगैरा रास्ते अपनाये जाते हैं। अैसा लगता है कि अिन सबका अेक शास्त्र ही, खास करके बड़े शहरोंमें, अपने-आप विकसित हो रहा है। अिसके छींटे देर-सबेर बाहर भी अुड़े बिना नहीं रह सकते।

शुद्धिकी आवश्यकता क्या सरकारोंको भी नहीं है? मंत्रीगण स्वीकार की हुअी नीतिके अनुसार काम करते हैं या नहीं? तथा सरकारी नौकर अपना काम किस तरह करते हैं? रिश्वतखोरी कैसे बन्द की जाय? — ये प्रश्न भी आत्मशुद्धिके हैं। अुसमें भी सरकारी नौकरोंके लिअे तो आत्मशुद्धि बहुत जरूरी है, क्योंकि अर्वाचीन राज्यपद्धति अैसी जटिल बनती जा रही है कि राज्यकी सच्ची सत्ता सरकारी नौकरोंके हाथमें ही होती है। फिर अुसमें सत्ताके दोष अुत्पन्न होते हैं। हमारे समाजमें यह अेक बड़ी आफत खड़ी हो गअी है।

और प्रजाको भी आत्मशुद्धिकी आवश्यकता है, जो वह रचनात्मक कार्यों द्वारा कर सकती है। परंतु आज अुन कार्योंका स्थान सरकारी रचनात्मक कार्य ले रहे हैं, जिनका संचालन सरकारी नौकर करते हैं। यह भी मानो अेक सरकारी विभाग ही बन गया है! अिस कारणसे प्रजामें आत्मशुद्धिका भाव आगे नहीं बढ़ता, और सारा काम कानूनी और राजकारोबारी ढंगसे चलता है। भूदान-आन्दोलन अिसमें अेक नअी छाप डालता है। वह प्रजामें कर्तव्यबुद्धि और आत्मशुद्धिकी भावना प्रेरित करके काम करता है।

गांधीजीने आत्मशुद्धि द्वारा ही कांग्रेसकी शक्ति बढ़ाअी थी। अुस समय सरकारी सत्ता प्रजाके खिलाफ थी, अिसलिअे सत्ताका लोभ और पदलालसा कांग्रेसमें आजके जैसे व्यापक रोग नहीं बन सकते थे। आज राजनीतिक संस्थाओं, सरकारों और प्रजा — तीनोंको आत्मशुद्धिके लिअे सतत जाग्रत रहना चाहिये। कांग्रेस यदि तीनोंमें आगे हो तो अुसकी शुद्धिका आन्दोलन प्रजा, सरकारों तथा कांग्रेस तंत्र — तीनो मोर्चों पर चलना चाहिये।

२६-५-'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

भूदानमें स्त्रियोंका कार्य

"भगवान् कृष्णके बाद भारतके संपूर्ण अितिहासमें महात्मा गांधीने स्त्रियोंके लिअे जितना काम किया अुतना और किसीने नहीं किया।" अिन शब्दोंमें अेक प्रसिद्ध विचारक और भारतीय अितिहासके गहरे अध्ययनकर्ताने अेक समय भारतकी स्त्रियोंमें गांधीजीके क्रान्तिकारी कार्यके लिअे अुन्हें अंजलि दी थी। असहयोग, नमक-सत्याग्रह और विदेशी मालकी दुकानोंके सामने पिकेटिंगके आन्दोलनने हमारी माताओं और बहनोंमें अेक नअी जाग्रति पैदा की और अुन्हें स्वतंत्रता-युद्धकी पहली कतारमें लाकर खड़ा कर दिया। लेकिन अिस बातसे अिन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतीय स्त्रीने अभी अपना योग्य स्थान प्राप्त नहीं किया है और वह राष्ट्रीय पुनर्निर्माण या मानव अुत्कर्षके कार्यमें अुत्तम भाग लेने लायक बने अिसके पहले बहुत कुछ करना बाकी है।

स्वतंत्रताके बादके वर्षोंमें भारतकी स्त्रियां फिरसे अपने घरोंमें लौट गअीं, क्योंकि स्वभावसे ही वे सत्ता और पार्टीकी नअी राजनीतिमें रस नहीं ले सकीं, जो दुर्भाग्यसे हमारे देशमें दिनोंदिन बहुत बढ़ती जा रही है। स्वभावसे ही रचनात्मक होनेके कारण हानिकारक या विनाशक कार्योंके बजाय सर्जनात्मक कार्योंमें अुनकी रुचि होती है। भूदान-आन्दोलनने, जिसका ध्येय जनशक्तिका निर्माण करना है, स्वभावतः अुन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। अिसके अलावा, आन्दोलनके करुणाप्रधान स्वरूपने अुन्हें और ज्यादा आकर्षित किया, क्योंकि अहिंसक पद्धतिसे काम करनेकी अुनमें स्वाभाविक प्रतिभा होती है। यह अुल्लेखनीय बात है कि कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूदान-स्त्री कार्यकर्ताओं द्वारा प्राप्त किये गये हैं। साथ ही अत्यन्त आश्चर्यजनक भूदानोंको अमली रूप देनेमें स्त्रियोंने बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। मांगरोठ (अुत्तर प्रदेशके हमीरपुर जिलेका अेक गांव) की वुद्धिमान स्त्रियोंका विशेष अुल्लेख किया जाना चाहिये, जिन्होंने अपने शंकाशील पतियों और भाअियोंको समझाया और सारे गांवका दान शक्य बनाया। भूदानके अितहासमें यह पहला ही पूरा गांव दानमें मिला था।

अिसलिअे भूदान-आन्दोलनमें काम करनेवाली स्त्रियोंकी संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। अुनमें से कअीने जीवन-दान भी किया है। अिनमें से अधिकांश बहादुर स्त्री-कार्यकर्ता पुरी सर्वोदय सम्मेलनमें अुपस्थित थीं। आचार्य विनोबाने अेक दिन अुन्हें अेक घंटेका अलग समय दिया और अुनके दिलचस्प सवालोंके जवाब दिये। अुस दिन वे बड़ी प्रसन्न मुद्रामें थे अिसलिअे अुनमें से अेक बहनको यह प्रश्न करनेका प्रोत्साहन मिला — क्या कस्तूरबा ट्रस्ट या दूसरी संस्थाओं द्वारा दी जानेवाली ६ माहकी ट्रेनिंग सक्रिय सेवा करनेके लिअे काफी नहीं है?

विनोबाने अुत्तर दिया, "मेरे अेक मित्रने मुझसे पूछा कि मेरा लड़का विवाह करने लायक हो गया है, मुझे अुसके लिअे कैसी बहू पसन्द करनी चाहिये। मैंने अुन्हें लिखा कि अुसमें तीन योग्यतायें होनी चाहियें: (१) कड़ा परिश्रम करनेकी तैयारी, (२) शुद्ध चरित्र, और (३) पूर्ण निरक्षरता (बहनें आश्चर्यसे हंसने लगीं।) और मैंने जोड़ा कि पहली दो योग्यतायें बहुत महत्त्वकी हैं; अगर अुसमें केवल तीसरी योग्यताका अभाव हुआ तो अुससे अधिक कुछ बिगड़नेवाला नहीं है। मेरे मित्रको मेरे अिस अुत्तरसे बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन अुनकी पत्नीन मेरा समर्थन करते हुअे

www.vinoba.in

कहा कि अैसी लड़कीको हम मनचाही शिक्षा दे सकते हैं, लेकिन अगर वह अधकचरी पढ़ी हुअी रही तो अुसके मनको सही दिशामें मोड़ना कठिन होगा।"

विनोबाने आगे कहा, "बुनियादी काम करनेके लिअे हमें अपढ़ बहनोंको चुनना चाहिये और अुन्हें दो या तीन साल तक तालीम देना चाहिये। मैट्रिक या मिडिल पास बहनोंसे कोअी लाभ नहीं होगा। सच्चा महत्त्व चरित्र और दृढ़ निश्चयका है। दूसरी सब बातें धैर्यपूर्वक किये जानेवाले कार्य और अनुभवसे प्राप्त की जा सकती हैं।"

अेक कार्यकर्ताने पूछा, "आपकी मांग है कि हमें दो साल तक अपनी सारी शक्ति केवल भूदानके कार्यमें लगानी चाहिये। लेकिन हमारे छोटे-छोट बच्चे हैं। अुनका क्या किया जाय?"

"अेक समय मैं भी छोटा बच्चा ही था। और मुझे आश्चर्य होता है कि अगर मेरी मांने मुझे छोड़कर भूदानका या दूसरा कोअी काम हाथमें ले लिया होता तो मेरी क्या हालत हुअी होती!" अितना कह कर विनोबा हंस पड़े, दूसरोंको भी हंसी आ गअी। कुछ क्षण ठहरकर विनोबाने कहा, "बच्चोंके पालन-पोषणके कार्यमें ही मातायें अपने बच्चोंमें सर्वोदयी विचारधाराके बीज डाल सकती हैं।"

विनोबाने आगे कहा, "स्त्रियोंके आगे आनेसे अुनकी नतिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। हमारे देशमें स्त्रियोंने धर्मकी रक्षामें पुरुषोंसे ज्यादा अच्छा और ज्यादा बड़ा भाग लिया है। आजकल वे समान अधिकारकी बातें करती हैं। मैं अिसे स्वीकार करता हूं। लेकिन समान अधिकारका यह मतलब नहीं कि पुरुष तम्बाकू पीते हैं अिसलिअे स्त्रियां भी पीयें। पुरुषोंकी तरह नीचे गिरनेका बेशक आपको अधिकार है, लेकिन आपका फर्ज तो अूपर अुठनेका है। आजकल शिक्षित परिवारोंमें कोअी पुरुष या स्त्री अपने सेवाके धर्मको समझती ही नहीं। अिसका नतीजा यह है कि पति और पत्नी अेक-दूसरेकी सेवाओंसे वंचित रहते हैं और अुन्हें नौकर रखना पड़ता है। लेकिन नौकर दिनों-दिन ज्यादा वेतन मांगता है। अिससे घरमें खींचातानी चलती है और पति-पत्नी दोनोंको वही खाना खाना पड़ता है जो नौकर अुनके लिअे पका देता है। अैसा ही होता है न, जानकीबाअी?" (विनोबाने सामने बैठी हुअी श्रीमती जानकीदेवी बजाजसे पूछा।)

वीर और भक्त माता जानकीबाअीने कहा, "बेशक! कभी कभी घरके चूल्हे पर खाना बनानेको महीनों गुजर जाते हैं।" आंखका अिशारा करके अुन्होंने आगे कहा, "कभी तो पति-पत्नी दोनों बड़बड़ाते हैं: 'चूल्हेको चूल्हेमें जाने दो!' और अिस तरह दोनों जीवनको कड़वा बना डालते हैं।" यह सुन सब बहनें हंसने लगीं।

दूसरा प्रश्न था:

"भूदानमें हमें कैसे काम करना चाहिये?"

विनोबाने बताया, "बहुत कुछ किया जा सकता है। भूदानमें मिले हुअे पूरे गांवोंमें बैठ जाअिये और वहां कस्तूरबा या नअी तालीमका केन्द्र चलाअिये। आप अुन गांवोंमें भी जा सकती हैं, जहां छठा भाग या अुससे ज्यादा जमीन मिली है।"

"और भूदानके बाद?"

"भूदान कोअी अंतिम ध्येय नहीं है। यह तो लग्नकी तरह प्रारंभ-मात्र है। कहा जा सकता है कि अुसके बाद सारी दुनिया शुरू होती है। जमीनका बंटवारा करना है, बीज, बैल वगैरा प्राप्त करना है, लोगोंको शिक्षा देनी है, सफाअी-स्वच्छता वगैराका विकास करना है, और ग्राम-राज्यकी स्थापना करनी है। आपने जीवन-दानके बारेमें सुना होगा। जब लोग जीवन-दान देते हैं, तो वे 'भूदानयज्ञ-आधारित, ग्रामोद्योग-केन्द्रित अहिंसक क्रान्ति' के लिअे अैसा करते हैं। यह सर्वांगीण क्रान्ति है।"

अुसके बाद अेक प्रमुख वयोवृद्ध स्त्री-कार्यकर्ताने अंतिम प्रश्न पूछा, "आप साधारणतया हमसे क्या आशा रखते हैं?"

अिस प्रश्नसे विनोबाको आनन्द हुआ और अुत्साहपूर्वक अुन्होंने कहा, "मैं आप लोगोंसे बहुत कुछ आशा रखता हूं। पुरुषवर्ग आज घोड़ोंकी तरह दौड़ रहे हैं। आपको अुनकी लगाम हाथमें लेनी चाहिये। कहनेका मतलब यह कि स्त्रियां घरमें काम करें और पुरुष घरसे बाहर, अिसमें कोअी बुराअी नहीं है। लेकिन पुरुषोंको घरमें भी काम करना चाहिये और स्त्रियोंको घरसे बाहर भी काम करनेका मौका मिलना चाहिये। पुरुषके बाहर काम करनेमें मेरा कोअी अेतराज नहीं है, बशर्ते वह अच्छी तरह काम करे। लेकिन वह अपनी जिम्मेदारियां कुशलता-पूर्वक पूरी नहीं कर पाता। वर्ना हमें हर २५ वर्षोंके बाद बड़ी लड़ाअियोंका सामना क्यों करना पड़े? अैसा क्यों होता है? जाहिर है कि पुरुष जिस तरीकेसे काम करता है, वह अशांति पैदा करता है। अिसलिअे मैं स्त्रियोंसे आशा करता हूं कि वे चारित्र्यवान, निग्रहवान और बुद्धिमान बनें और पुरुषोंको गलत मार्ग लेनेसे रोकें। स्त्रीको पुरुष पर अैसा शासन करना चाहिये कि वह गलत रास्ते न जाये।"

विनोबाने अपनी बात स्पष्ट की, "अिसके लिअे मेरी यह योजना यह है कि १२ वर्षसे कम आयुके बच्चोंकी शिक्षा स्त्रियोंको सौंप दी जाय। तब समाज अुनके नियंत्रणमें रहेगा। लेकिन पश्चिममें स्त्रियां शिक्षणका काम करती हैं, फिर भी वहां लड़ाअियां होती हैं। क्योंकि स्त्रियां वहां पुरुषोंकी नकल करती हैं और पुरुषोंकी सेनाकी तरह अपनी सेनाके लिअे भी शोरगुल मचाती हैं। अिससे भाड़में से निकलकर भट्टीमें गिरनेकी स्थिति पैदा होती है। लेकिन मेरा अुद्देश्य यह है कि स्त्रियां बाहरके काम पर नियंत्रण रखें ताकि वह सही दिशामें चले। अुस स्थितिमें वे समाजको आजकी भयंकर स्थितिसे बचा लेंगी।

२६-४-'५५ **सुरेश रामभाअी**

(अंग्रेजीसे)

अेक विदेशी मित्रका प्रश्न

ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है, यह स्पष्ट होता जा रहा है कि जिसे समाजवादी ढांचा कहा जाता है, वह समाजवाद नहीं बल्कि जवाहरलालजीकी सरकार देशके लिअे जो कार्यक्रम कार्यान्वित करना चाहती है, अुसका द्योतन करनेवाला अेक अस्पष्ट-सा परन्तु सुभद्र शब्द-प्रयोग है। अिस कार्यक्रममें मुख्य हैं बड़े पैमाने पर चलनेवाले कुछ बड़े अुद्योग जिनका संचालन सरकारके हाथमें होगा। ये सरकारी अुद्योग तथाकथित निजी अुद्योगके विरोध या होड़में खड़े नहीं होंगे, दोनों साथ-साथ चलेंगे।

विदेशी शासनने जनताकी जिन शक्तियोंको अवरुद्ध कर रखा था, स्वराज्यने अुन्हें मुक्त कर दिया है और अुसके परिणाम-स्वरूप भारत अपना अेक नया निर्माण कर रहा है। अिस नये भारतमें काम कर रही अिन विविध शक्तियोंमें सरकारकी भी अेक शक्ति है और वह चाहे तो प्रधानमंत्रीके मार्गदर्शनमें और अुनकी अिच्छाके अनुसार अपनी योजनाअें बना सकती है और अुन्हें कार्यान्वित कर सकती है। लेकिन अिन योजनाओंको भी हमारी ज्यादातर गांवोंमें बसनेवाली जनताकी वास्तविक और तात्कालिक आवश्यकताओंके अनुकूल होना चाहिये। लोकमतका नेतृत्व करनेवाले लोगोंको चाहिये कि वे अिन योजनाओंकी परीक्षा करें और लोगोंको तदनुसार शिक्षित करें।

अिस दृष्टिसे अिन योजनाओंके बारेमें अेक विदेशी मित्रकी चेतावनी बहुत स्वागत-योग्य है। अुन्होंने खासकर अिन योजनाओंकी

www.vinoba.in

लोगोंको काम-धंधा देनेकी क्षमताकी चर्चा की है, जो बहुत प्रासंगिक है।

यह मित्र और कोओी नहीं अमेरिकाके भूतपूर्व राजदूत श्री चार्ल्स बाओुल्स हैं। वे कुछ दिन हुओे भारत आये थे और अुन्होंने जो कुछ देखा और अुसकी अुनके मन पर जो छाप पड़ी, अुसे प्रगट करते हुओे अेक निवेदन किया था। नीचे अिस निवेदनका अेक अंश अुद्धृत किया जा रहा है:

"मुझे यह देखकर खुशी हुओी है कि दूसरी पंचवार्षिक योजनामें बड़े पैमाने पर अुद्योगीकरणके लिओे कुछ अत्यंत साहसपूर्ण योजनाअें शामिल की गयी हैं। लेकिन मैं कुछ लोगोंकी अिस धारणाको चिन्ताकी दृष्टिसे देखता हूं कि अुद्योगीकरणसे रोजगारीकी समस्या बहुत अंशमें हल हो जायगी।

"अमेरिका दुनियाके लोहेके अुत्पादनका आधेसे अधिक लोहा अुत्पन्न करता है, लेकिन अिस काममें केवल १२ लाख आदमी लगे हैं।

"अिसी तरह हम दुनियाकी तीन-चौथाओी मोटर-गाड़ियां बनाते हैं, पर अिस काममें केवल १३ लाख आदमी लगे हैं।

"अुद्योगीकरण बहुत तेजीसे किया जाय तो भी वह भारतके केवल शहरोंमें फैली हुओी बेकारीको ही हल कर सकेगा, अुससे अधिक नहीं। गांवोंमें और छोटे शहरोंमें जो करोड़ों बेकार और अर्ध-बेकार पड़े हैं, अुनका क्या होगा? अुनको काम-धंधा देनेका तो अेक ही तरीका है — विविध छोटे-छोटे अुद्योग और ग्रामोद्योग। गांवोंमें वे लोहार, मोची, बढ़ओी आदिकी तरह काम कर सकें, तो ही अुन्हें काम मिलेगा। या तो हमें अिन लोगोंके पास गांवमें काम-धंधा पहुंचाना होगा या वे अुसकी तलाशमें शहरोंकी तरफ — जिनमें यों ही आवश्यकतासे अधिक आबादी अिकट्ठी हो गयी है — बढ़ते आयंगे।

"लेकिन दूसरी ओर भारतमें काम-धंधेका कितना विशाल अवकाश पड़ा हुआ है। देहाती क्षेत्रोंमें हर जगह अुसके लिओे अवसर मौजूद हैं। अुदाहरणके लिओे, किसी भी पिछड़े हुओे निष्क्रिय गांवको ले लीजिये; लोगोंके लिओे घर बनानेके काममें ही कितने लोग खप सकते हैं — पत्थर फोड़ने-वाले, अींटें तैयार करनेवाले, बढ़ओी, लोहार, खिड़कियों आदिमें कांच जड़नेका काम करनेवाले (ग्लेजर), नलोंकी मरम्मत करनेवाले आदि। लोगोंकी कितनी ही अैसी आवश्यकतायें हैं, जो पूरी नहीं हुओी हैं और अुन्हें पूरा करनेके लिओे आवश्यक तालीम देकर काम करनेवाले जुटाये जा सकते हैं। प्रश्न अितना ही है कि अिन दोनों चीजोंका जोड़ किस तरह बिठाया जाय।

"और आखिरी लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि भारतकी सबसे बड़ी प्राकृतिक संपत्ति — अुसके युवकों और युवतियोंके लिओे क्या किया जाय? आज भारतमें हजारों विद्यार्थी निराशा और अरक्षितताके शिकार हैं। अिन शिक्षित युवकों और युवतियोंको — जो अुनकी यही हालत रही तो विस्फोट पैदा करके सब किया-कराया मटियामेट कर सकते हैं — भारतके वर्धमान विकासके कार्यमें किस तरह और कितनी जल्दी नियुक्त किया जाय, यह अेक अत्यन्त विचारणीय सवाल है।"

यही प्रश्न अुन बहुसंख्यक रचनात्मक कार्यकर्ताओंके मनमें अुठ रहा है, जो देशभरमें जहां-तहां बिखरे हुओे काम कर रहे हैं।

भूदान-आन्दोलनका पूरा विश्लेषण किया जाय, तो वह भी अिसी सवालका अुत्तर मांगता दिखाओी देगा। वह खासकर यह प्रश्न खड़ा करता है कि आज भारतमें जो अनेक कार्य किये जा रहे हैं, अुनमें से सर्वोच्च प्राथमिकता किसे दी जाय? अुसका अपना अुत्तर यह है कि यह प्राथमिकता भूमि-वितरणको देनी चाहिये और अिस भूमि-वितरणके साथ साथ गृह-अुद्योग और गोसेवा भी चलनी चाहिये। अैसा होगा तो भूदानके फल-स्वरूप जो लाखों भूमिवान किसान पैदा होंगे, अुन सबको पूरा-पूरा काम मिलेगा। अपनी जनताके बहुत बड़े भागके लिओे पूरा-पूरा काम-धंधा मुहैया करनेके लिओे यह अेक सीधा कदम है, जो कि बेकारी और बढ़ती हुओी संपत्तिके वितरणके प्रति अ-हस्तक्षेपका रवैया रखनेवाले जत्थाबंद अुत्पादनके समाजवादी कार्यक्रमसे बहुत भिन्न है।

१७-५-'५५ मगनभाओी देसाओी

(अंग्रेजीसे)

यंत्रोद्योगोंके जरिये रोजी पैदा करनेका खर्च

कॉलिन क्लार्कने अपनी पुस्तक 'कंडीशन्स आफ अिकानॉमिक प्रोग्रेस' में (१९४०) पृष्ठ ३८९ पर विविध देशोंमें पूंजी और वास्तविक आयके निम्नलिखित आनुपातिक संबंध दिये हैं। ये आंकड़ बताते हैं कि वर्षमें १ रुपयेकी आय पैदा करनेके लिओे कितने रुपयेकी पूंजी लगाना पड़ती है:

देश	पूंजी	देश	पूंजी
आर्जेन्टाअिना	५.८५	अिटली	४.३६
स्वीडन	५.६५	यू० अेस० अे०	४.३३
आस्ट्रेलिया	५.५३	कैनेडा	४.३२
हंगरी	५.०५	ब्रिटेन	३.७२
फ्रांस	४.८२	जापान	३.५७
बेलजियम	४.६६	स्पेन	३.५२
जर्मनी	४.४५	आस्ट्रिया	३.५०

चूंकि अुक्त अेक रुपयेमें कर, व्यवस्थापकोंका वेतन और व्यापारिक मुनाफा भी शामिल है, अिसलिओे काफी निश्चयपूर्वक यह मान लिया जा सकता है कि मजदूरोंको मिलनेवाली वास्तविक आय कुल आयकी आधेसे अधिक नहीं है। अिस प्रकार हम यह मान सकते हैं कि यंत्रोद्योगोंवाली रोजगारी पैदा करनेके लिओे अभीष्ट आयसे ५-१० गुनी अधिक पूंजी लगाना जरूरी होता है।

दूसरे शब्दोंमें मजदूरको वर्षमें १,००० रु० की मजदूरी देनेके लिओे प्रति मजदूर ५ से १० हजार रुपये तककी पूंजी लगाना होगी।

अिसके विरुद्ध स्वतंत्र रोजगारीमें अेक मनुष्य अपनी जीविका कमा सके अिसके लिओे जिस पूंजीकी जरूरत होती है वह ५-१० गुनी कम है। नीचेका कोष्ठक* बताता है कि कुछ चुने हुओे ग्रामोद्योगोंमें लगायी हुओी पूंजी और मजदूरकी वार्षिक आयमें क्या संबंध है। अिस कोष्ठकको अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डकीरि सर्च अिन्स्टिटचूट कमीटीने तैयार किया था।

ताड़ गुड़	०.१५
ग्रामोद्योगी दियासलाओी	०.२३
घानी (मूंगफलीका तेल)	०.३३
घानी (जिंजेलीका तेल)	०.४५
अखाद्य तेलोंसे साबुन	०.३९
चमड़ा कमाना	०.३५
स्याही-सोख कागज	२.१६

* देखिये अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक 'बिल्डिंग फ्राम विलो'।

www.vinoba.in

यह कोष्ठक बताता है कि केवल अेक ही ग्रामोद्योग अैसा है जिसमें पूंजी वार्षिक आयसे अधिक है। बाकी सारे अुद्योगोंमें लगायी जानेवाली पूंजी वार्षिक आयका अेक अंशमात्र है।

जाहिर है कि जिस देशमें पूंजीकी कमी है और जहां श्रम प्रति वर्ष ३,००० करोड़ मनुष्य-दिनोंके हिसाबसे व्यर्थ जाता है, वहां यानी भारतमें गृह और ग्रामोद्योग ही बेकारीका सवाल हल कर सकते हैं।

ग्रामोद्योगोंका समुचित क्षेत्र अन्न, वस्त्र, घर, औजार, दियासलाअी, साबुन, कागज आदि प्राथमिक आवश्यकताकी वस्तुअें हैं। ये सारी वस्तुअें अैसी हैं कि अुनके अुत्पादन और अुपभोगका आसानीसे विकेन्द्रीकरण हो सकता है। आवश्यक कानून बनाये जायं, कार्यके विविध अंगोंमें सहकार और संगठनकी व्यवस्था की जाय और काम करनेवालोंको टेकनीकल सलाह और मार्गदर्शन दिया जाय तो स्वतंत्र रोजगारवाला क्षेत्र थोड़े ही समयमें राष्ट्रको अन्न, वस्त्र और घर जुटानेका काम बखूबी करने लगे।

यह दलील कि कपड़ा, तेल, साबुन, दियासलाअी और अींटें बनानेका काम ग्रामोद्योगोंको सौंप देनेसे देशमें जीवनका मान गिरेगा सही नहीं है। लोहा और कोयला, जल-विद्युत्, और रेलगाड़ियोंसे होनेवाले यातायात आदिका वैसा विकेन्द्रीकरण नहीं हो सकता, जैसा कि अन्न और कपड़ेके अुत्पादनका। रोलिंग मिल्स और लोहा गलानेकी भट्टियां बंद कर दी जायं तो लोहा और अिस्पातकी तत्काल ही अैसी कमी पैदा हो जायगी जिसे पूरा करना संभव नहीं होगा। लेकिन कपड़ा और तेलकी मिलें और दियासलाअीके कारखानें बंद किये जायं — अुन्हें अेकदम नहीं, तीनसे पांच सालमें क्रमशः बंद किया जाय — तो कोअी गड़बड़ नहीं होगी और सारा देश आसानीसे खादी अपना लेगा; अलबत्ता जो खुद नहीं कातते अुनके लिअे कीमत थोड़ीसी बढ़ जायगी। बाकी लोगोंको कपड़ा अपने अवकाशके परिश्रमसे ही प्राप्त हो जायगा।

दियासलाअी और साबुन आदिकी कीमतें तो बिलकुल ही नहीं बदलेंगी।

लेकिन जीवन-मानका निर्धारण केवल कीमतोंके स्तरसे नहीं हुआ करता। अुसका निर्धारण वास्तविक आय, जिसे खर्च किया जा सकता है, और अपनी प्रमुख आवश्यकताओंको पूरा करनेमें होनेवाले व्ययके तुलनात्मक संबंधके आधार पर करना चाहिये। चीजें सस्ती हो जायं तो अुससे बेकार आदमीको कोअी लाभ नहीं होता; निश्चित आयके बिना कीमतोंका अुसके लिअे कोअी मतलब नहीं होता। देशको सस्ती चीजोंसे भर दिया जाय तो अुससे समृद्धिकी सृष्टि नहीं होगी। लोगोंके हाथमें क्रय-शक्ति रखनेसे ही समृद्धि हो सकती है। और अिसका अुपाय यह है कि अुत्पादकों और अुपभोक्ताओंको अेक-दूसरेके पास ला दिया जाय, जिसका अुत्तम और सरलतम तरीका विकेन्द्रित गृह और ग्रामोद्योग हैं।

कल्याण-राज्यमें जहां कि मुख्य अुद्देश्य सबका भला करना है यह दलील नहीं अुठायी जा सकती कि अुत्पादनकी श्रम-प्रधान पद्धति पुरानी और खर्चीली है। जब तक अेक भी आदमी बेकार है तब तक गृह और ग्रामोद्योगोंके जरिये स्वतंत्र काम-धंधा ही अिस समस्याका सबसे आसान, सस्ता, और शीघ्रफलदायी हल है। और जब बेकारी नहीं रहेगी, तथा सब लोग धंधेमें लग जायंगे तब वह सबसे कम खर्चीला और स्थायी भी सिद्ध होगा, खासकर यदि स्वतंत्र धंधा करनेवाले परिवार अुत्पादनके ज्यादा जटिल कार्योंके लिअे अुत्पादकोंकी सहकारी-समितियोंका निर्माण करें।

(अंग्रेजीसे)

मॉरिस फ्रिडमेन

नयी या बुनियादी तालीम

[राजसुनाखला, अुड़ीसामें, ता० १७-४-'५५ को शिक्षकोंके सामने दिये हुअे प्रवचनसे।]

अभी आवड़ीमें कांग्रेसने नयी तालीमके बारेमें प्रस्ताव पास किया। पंडित नेहरूने खुद वह प्रस्ताव रखा। १० सालके बाद नयी तालीम ही सरकारी तालीम होगी अैसा अुसमें कहा गया है। अिसलिअे आज जो नयी तालीमके स्कूल चलते हैं, वे नमूनेके होने चाहिये। तो ही अुनसे जो अपेक्षा की जाती है, वह पूर्ण होगी और हिन्दुस्तानभरमें अुनका अनुकरण होगा। नहीं तो कहेंगे कुछ और चलेगा कुछ। आज तो जिनको बेसिक बायस्ड स्कूल कहते हैं वे अिस तरहसे चलते हैं कि अुनको नरसिंहावतार ही कहना होगा, न पूरा मानव, न पूरा पशु। अिसलिअे यह बहुत जरूरी है कि हम लोग कुछ नमूनेके विद्यालय चलायें। लेकिन अिसके मानी क्या हैं, अिस बारेमें चित्तमें सफाअी होनी चाहिये।

बहुतसे लोग समझते हैं कि लड़कोंको थोड़ासा अुद्योग सिखा दिया, कुछ चरखा काता कि नयी तालीम हो गअी। कुछ लोग समझते हैं कि ज्ञानके तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया तो नयी तालीम हो गयी। और कुछ लोग समझते हैं कि ज्ञानका कामके साथ जोड़ बिठा दिया तो नयी तालीम हो गयी। फिर वह जोड़ सहज रूपसे बैठता है या नहीं, अिस तरफ ध्यान देनेकी भी जरूरत नहीं है।

ये तीनों कल्पनायें दूषित हैं। नयी तालीमके विद्यार्थियोंको थोड़ासा अुद्योग सिखा देनेसे काम नहीं चलेगा। नयी तालीमके लड़के तो अुद्योगमें अितने प्रवीण होंगे कि जैसे मछली पानीमें तैरती है अुसी तरह वे काम करेंगे।

सुना है कि यहां पर लड़कोंको कुछ छात्रवृत्तियां दी जाती हैं। हम तो यह चाहेंगे कि आखिरके दो महीनोंमें लड़के चार घण्ट काम करके अुतना पैसा कमा लें और छात्रवृत्ति न लें। अगर वे अुतना नहीं कर सकते हैं तो अिसका मतलब यह हुआ कि अुनको जो अुद्योग सिखाया गया है वह निकम्मा है और आगे जाकर वे वह अुद्योग नहीं करेंगे। मान लीजिये कि आपके स्कूलमें लड़ाअीकी विद्या सिखायी गअी, अैसी विद्या कि जिसके आधारसे कोअी लड़ाअी लड़ेंगे नहीं। तो फिर वह विद्या किस कामकी है? हमारे लड़कोंमें यह हिम्मत आनी चाहिये कि चार घंटा अुद्योग करके अपने पेटके लिअे कमा लें। नमूनेके तौर पर कुछ थोड़ासा कातना, बुनना जान लिया अुतनेसे काम नहीं चलेगा।

कुछ लोग यह कह सकते हैं कि हमें अुद्योगमें प्रवीण होनेकी क्या जरूरत है? हम तो स्कूलमें पढ़ानेवाले हैं। मां छोटे बच्चोंको खाना कैसे खाया जाता है यह सिखाती है। जब वे सीख जाते हैं तो यह नहीं कहा जाता कि वे खानेकी कला सीख गये, तो फिर अुनको खानेकी क्या जरूरत है? परंतु खानेका ज्ञान हुआ अितनेसे काम पूरा नहीं होता है। मनुष्यको हर रोज खाना मिलना चाहिये। जैसे मनुष्यके लिअे खाना नित्यकी चीज है, अुसी तरह नयी तालीमके शिक्षकोंको और लड़कोंको नित्य चार घंटा शरीर-परिश्रम करना चाहिये। अुनको अुद्योगमें अितना प्रवीण होना चाहिये कि गांवके बढ़अी, किसान आदि अुनके पास सीखने जायें। औजारोंमें सुधार करनेकी कला भी अुनको हासिल होनी चाहिये। अुनको खेतीका आचार्य बनना चाहिये। आज ग्रामोद्योग टूट गये हैं अिसलिअे नयी तालीमके जरिये ग्रामोद्योगोंको फिरसे खड़ा करना है।

नयी तालीममें पुस्तकोंका महत्त्व नहीं है, अिसलिअे ज्ञानकी अुपेक्षा नहीं की जाती। अक्सर माना जाता है कि अिसमें तो जितना सहज ज्ञान मिलेगा अुतना ही बस है। लेकिन यह खयाल गलत है। नयी तालीममें जीवनकी सब बुनियादी चीजोंका पूरा

www.vinoba.in

ज्ञान होना चाहिये। लंबा-चौड़ा अितिहास और निकम्मे राजाओंकी नामावली याद रखनेकी जरूरत नहीं है। अुससे तो विद्यार्थियोंके सिर पर नाहक बोझ बढ़ता है। लेकिन जीवनके जो बुनियादी विचार हैं, जिनसे हमारा जीवन विकसित होता है अुनका ज्ञान जरूरी है। तत्त्वज्ञान, धर्म-विचार, नीति-विचार — अिन सबकी जानकारी जरूरी है। समाज-शास्त्र, मानव समाजका पूरा अितिहास आदिकी जानकारी आवश्यक है। हमारे समाजकी और दूसरे समाजकी विशेषतायें क्या हैं, अुनका ज्ञान होना चाहिये। विज्ञानके मूलभूत विचार लड़कोंको मालूम होने चाहिये। आरोग्य-शास्त्र, आहार-शास्त्र, स्वच्छता, रसोअी-शास्त्र आदिका अुत्तम ज्ञान होना चाहिये। अिस तरह नयी तालीममें ज्ञानकी कोअी कमी नहीं होनी चाहिये। भाषाका भी अुत्तम ज्ञान होना चाहिये। अपने विचार ठीक ढंगसे प्रकाशित करनेकी कला मालूम होनी चाहिये। अक्षर सुन्दर होने चाहिये, साहित्यका ज्ञान होना चाहिये। अिस तरह हमारी तालीममें ज्ञानकी कमी नहीं होगी। लेकिन निकम्मा ज्ञान नहीं होगा।

आजकलकी युनिवर्सिटियोंमें विद्यार्थियोंके सिर पर नाहक निकम्मे ज्ञानका बोझ डालते हैं और कहते हैं कि ३३ नम्बर मिलें तो पास होंगे। अिसका मतलब है कि ६७ प्रतिशत भूलनेकी गुंजाअिश रखी गयी है। वास्तविक ज्ञानमें तो १०० प्रतिशत याद रहना चाहिये। जो रसोअिया ८० प्रतिशत अच्छी रोटी बना सकता है अुसको कौन नौकरी देगा। अुसी तरह ज्ञानमें कच्चापन नहीं होना चाहिये। ज्ञान या तो है या नहीं है, सोलह आना है या नहीं है। क्या यह हो सकता है कि कोअी मनुष्य ८० प्रतिशत जिंदा है और २० प्रतिशत मरा है। अगर वह जिंदा है तो पूरा जिंदा है और मरा है तो पूरा मरा है। फी सदीवाली बात यहां नहीं चलती है। अुसी तरह ज्ञानमें भी वह बात नहीं चलती है। ज्ञान तो पूरा और निश्चित होना चाहिये, संशययुक्त नहीं होना चाहिये। लेकिन हमारे विश्वविद्यालयवालोंने ६७ प्रतिशत भूलनेकी गुंजाअिश रखी है, क्योंकि वे भी जानते हैं कि निकम्मा ज्ञान सिखाया जाता है।

नयी तालीममें अिस तरह भूलनेकी गुंजाअिश नहीं होगी। जितना भी सिखाया जायगा अुतना सब याद रखने लायक होगा और विद्यार्थी सब याद रखेगा क्योंकि वह ज्ञान जीवनमें काममें आयेगा। वास्तवमें जो विद्या होती है अुसे मनुष्य भूलता नहीं और जिसे भूलता है वह विद्या नहीं है। अिस तरह नयी तालीममें हम अैसी विद्या सिखायेंगे जो भूली नहीं जायगी। नअी तालीम पाकर तो महाज्ञानी लोग निकलने चाहिये।

अब ज्ञान और कामका जोड़ बिठानेकी बात लीजिये। अिसीके लिअे 'को-रिलेशन' शब्द अिस्तेमाल किया जाता है। हमने तो 'समवाय' शब्द बनाया है। जब हमने वह अंग्रेजी शब्द सुना तो हमने कहा कि यह क्या चीज है? बुनियादी तालीम तो हमने बनायी है, किसी साहबने नहीं बनायी है। अिसलिअे हम पर कोअी जिम्मेवारी नहीं है कि हम अुस शब्दका अनुवाद करें। ये लोग कहते हैं कि पश्चिममें कोअी पद्धति चलती है और अुसमें वह शब्द आता है। लेकिन हमें दूसरोंकी पद्धति नहीं चाहिये। हम अपनी शिक्षा-पद्धति बना रहे हैं। अिसलिअे अुस अिंगलिश शब्दका अुपयोग करनेकी कोअी जरूरत नहीं है। हमको तो 'समवाय' करना है।

मिट्टी और घड़ा ये दोनों चीजें अितनी मिलीजुली हैं कि जिस मिट्टीका घड़ा बना है वह मिट्टी और वह घड़ा अिन दोनोंमें क्या संबंध है यह कहना कठिन मालूम होता है। क्या मिट्टी और घड़ा दो चीजें हैं या अेक ही है? अगर आप कहेंगे कि दोनों अलग-अलग चीजें हैं, तो मैं कहूंगा कि आपका घड़ा ले जाअिये और मेरी मिट्टी यहां रहने दीजिये। लेकिन ये दोनों चीजें अिस तरह मिली हुअी हैं कि दोनोंको अलग नहीं किया जा सकता। जहां मिट्टी मिल गयी वहां घड़ा भी मिल गया। लेकिन आप कहें कि दोनों अेक ही हैं तो मैं कहूंगा कि यहां पर मिट्टी पड़ी है अुसमें पानी भरो। यह भी नहीं हो सकता है। अिसका मतलब है कि ये दोनों अेक-दूसरेसे अितने ओतप्रोत हैं कि अुनका अलगाव नहीं बता सकते हैं और अद्वैत भी नहीं बता सकते हैं। अिस तरह जहां पर द्वैत और अद्वैतका निर्णय नहीं होता है, अैसे संबंधको समवाय कहते हैं। अिस शिक्षा-पद्धतिमें ज्ञान और अुद्योगका समवाय होगा; हम बता नहीं सकेंगे कि अिस समय ज्ञान चल रहा है या अुद्योग। वही हमारी पद्धति होगी। रामचंद्र विश्वामित्रके आश्रममें गये, तो वहां पर अुन्होंने यज्ञकी रक्षा की और अुन्हें ज्ञान भी मिला। अिस तरह यज्ञ-रक्षाका कर्मयोग भी हुआ और अुसके साथ-साथ अुन्हें सहज भावसे ज्ञान भी मिला। अिस तरह ज्ञान और कर्ममें फर्क नहीं किया जायेगा। ज्ञानकी प्रक्रिया चली है तो कर्मकी प्रक्रिया भी चली है और कर्मकी प्रक्रिया चली है तो ज्ञानकी प्रक्रिया भी चलेगी। कर्म और ज्ञान अेक-दूसरेसे अितने ओतप्रोत होंगे कि किसी भी तरहका जोड़ बिठानेका काम नहीं किया जायगा। बाहरसे ज्ञान लेनेकी बात नहीं रहेगी। अुद्योगके जरिये ही ज्ञानका विकास किया जायेगा और ज्ञानके जरिये अुद्योगका विकास किया जायेगा। यह हमारी पद्धति है। ज्ञान और कर्मकी सिलाअी करके जो पद्धति बनायी जायेगी वह हमारी नहीं होगी। हमारी पद्धतिमें तो ज्ञान और कर्म अेक-दूसरेमें ओत-प्रोत रहेंगे।

नयी तालीमके बारेमें जो गलतफहमियां हैं, अुस बारेमें मैंने अभी कहा। अब अेक महत्त्वकी बात कहूंगा। नअी तालीम आजकी समाज-रचना कायम रखकर नहीं दी जा सकती है। आजकी समाज-रचनाके साथ नयी तालीमका पूरा विरोध है। अगर कोअी कहे कि नअी तालीम तो अेक तालीमका प्रकार है, अुद्योगके जरिये तालीम देनेकी अेक पद्धति है, तो अुसका कहना गलत है। नअी तालीम तो नअी समाज-रचना ही निर्माण करेगी। अिसके बिना वह जिंदा नहीं रह सकती है। आजकी समाज-रचनामें ही नयी तालीमको बिठाया जाय और शिक्षकोंकी तनख्वाहमें कमबेसी रहे, डिग्रीके अनुसार तनख्वाह दी जाय, यह सब अुसमें नहीं चलेगा। अगर नयी तालीममें ही शिक्षकोंकी तनख्वाहमें फर्क रहा, तो स्टेटमें कैसे बदल होगा? आज तो स्टेटका जो सारा यंत्र बना है अुसमें योग्यताके अनुसार तनख्वाह दी जाती है, दर्जे बने हुअे हैं। नअी तालीम अिसको खतम करेगी। अगर नअी तालीमका अुसके साथ विरोध नहीं आता है, और नअी तालीम अुसको तोड़ती नहीं, तो वह नअी तालीम ही नहीं है। नअी तालीममें शरीर-परिश्रम और मानसिक परिश्रमकी नैतिक और आर्थिक योग्यता समान मानी जायेगी और योग्यता या ज्ञानके अनुसार दर्जे नहीं पड़ेंगे। सब कामोंकी योग्यता समान मानी जायेगी। अिसका मतलब है कि आजकी कुल आर्थिक रचना ही हमें बदलनी है। और वह बदलनेके वास्ते ही नयी तालीम है।

विनोबा

विषय-सूची

		पृष्ठ
मालिकी-हक और राज्य	मगनभाई देसाई	१०५
घरेलू दस्तकारियोंका मूल्य	विल्फ्रेड वेलॉक	१०६
त्रिविध आत्मशुद्धि	मगनभाई देसाई	१०८
भूदानमें स्त्रियोंका कार्य	सुरेश रामभाअी	१०८
अेक विदेशी मित्रका प्रश्न	मगनभाई देसाई	१०९
यंत्रोद्योगोंके जरिये रोजी पैदा करनेका खर्च	मॉरिस फ्रिडमेन	११०
नयी या बुनियादी तालीम	विनोबा	१११

www.vinoba.in